

---

Shivabhaktena Dvijaprati Shivarchanopadesham

शिवभक्तेन द्विजप्रति शिवार्चनोपदेशम्

Document Information

---

Text title : Shivabhaktena Dvijaprati Shivarchanopadesham

File name : shivabhaktenadvijapratisivArchanopadesham.itx

Category : shiva, shivarahasya, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 20 | 156-166||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

## शिवभक्तेन द्विजप्रति शिवार्चनोपदेशम्



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

शिवभक्तः उवाच

(अतः) शिवैकशरणो भव त्व द्विजसत्तम ।

शिवैकशरणानां तु नास्त्येव यमयातना ॥ १५६ ॥

बिभेति शाङ्करं दृष्ट्वा यमोऽपि सततं द्विज ।

अतो भज महादेवं भक्त्या भस्मविभूषितः ॥ १५७ ॥

समर्चय महादेवं रुद्राक्षाभरणोज्ज्वलः ।

जाबालोक्तविधानेन त्रिपुण्ड्रं कुरु सादरम् ॥ १५८ ॥

शिवार्चनं यथा नित्यं भस्मरुद्राक्षधारणम् ।

कर्तव्यं श्रद्धया नित्यमप्रमादेन सर्वथा ॥ १५९ ॥

निधनेत्यादि ये मन्त्रा नमोऽन्ताः पापनाशकाः ।

तैरन्वहं पूजनीयो लिङ्गरूपी सदाशिवः ॥ १६० ॥

नित्यमाद्रैरनाद्रैर्वा बिल्वपत्रैर्महेश्वरम् ।

पूजय त्वं त्रिकालं च भक्तिश्रद्धापुरःसरम् ॥ १६१ ॥

बिल्वपत्राणि शुद्धानि स्वतः पर्युषितान्यपि ।

शङ्करार्पणयोग्यानि भवन्ति द्विजसत्तम ॥ १६२ ॥

सुवर्णबिल्वपत्रं च रत्नं च रजतं तथा ।

न हि पर्युषितं विप्र शुद्धमेव स्वयं यतः ॥ १६३ ॥

अर्चितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्य च पुनः पुनः ।

शङ्करार्पणयोग्यानि नूतनानीव सर्वदा ॥ १६४ ॥

शुष्क त्रुटितमार्द्रं वा बिल्वपत्रं शिवप्रियम् ।

तस्मादर्चय यत्नेन बिल्वपत्रैः सदाशिवम् ॥ १६५ ॥

महापापविनिर्मुक्तो भविष्यसि न संशयः ॥ १६६ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते शिवभक्तेन द्विजप्रति शिवार्चनोपदेशं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २०। १५६-१६६ ॥


- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 20 . 156-166..

Notes:


A Śivabhakta शिवभक्त gives Upadeśa उपदेश to a Divja द्विज about merits of worshipping Śiva शिव.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Shivabhaktena Dvijapрати Shivarchanopadesham*

pdf was typeset on June 16, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

